- यह आजीविका साधन विशेष रूप से **नृजातीय अल्पसंख्यकों, ग्रामीण गरीबों और महिलाओं के साथ-साथ हाशिए पर स्थित आबादी की गरीबी की रोकथाम** में महत्वपूर्ण है।

- **पर्यावरण:** अंतर्देशीय मछलियां वस्तुतः **पारितंत्र की कार्यप्रणाली और पारितंत्र में परिवर्तन के संकेतक** के रूप में कार्य करती हैं। इसके अतिरिक्त, अंतर्देशीय स्तर पर मछली पकड़ने और जलीय कृषि संबंधी कई कार्यों के कम पर्यावरणीय प्रभाव के कारण इन्हें **'हरित खाद्य (Green Food)' आंदोलन** के लिए प्रासंगिक माना जा सकता है।
- **सामाजिक:** दुनिया भर में **कई समुदायों के लिए ये गतिविधियां अत्यंत महत्वपूर्ण** होती हैं। कई संस्कृतियों में, अंतर्देशीय मछलियों को पवित्र माना जाता है और साथ ही वे कई समुदाय की सामुदायिक पहचान भी होती हैं।
- **मानव स्वास्थ्य और कल्याण:** यह रोग नियंत्रण और चिकित्सा अनुसंधान में विकास में योगदान करता है। **रोग वाहक (जैसे मलेरिया, डेंगू बुखार, पीत-ज्वर) मच्छरों के नियंत्रण के लिए,** लार्वा का भक्षण करने वाली मछली का प्रायः उपयोग किया जाता है।

मात्स्यिकी/मत्स्य पालन क्षेत्रक के विकास के समक्ष बाधाएं

- **अपर्याप्त अवसंरचना:** विशेष रूप से मछली पकड़ने के बंदरगाह, मछली को जलपोतों से उतारे जाने वाले केंद्रों, शीत भंडारण श्रृंखला और वितरण प्रणाली, खराब प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन, अपव्यय, पता लगाने की क्षमता और प्रमाणन, कुशल कार्यबल की अनुपलब्धता आदि कुछ अन्य कारक हैं जो मात्स्यिकी के विकास को बाधित करते हैं।
- **तकनीकी पिछड़ापन और वित्तीय बाधाएं:** भारत में गहरे समुद्र में मछली पकड़ने के उद्योग के विकास में हुए विलंब के लिए, ये बाधाएं मुख्य रूप से उत्तरदायी रही हैं।
- **अत्यधिक दोहन:** असंधारणीय रूप से मछली पकड़ने से मछलियों और जलीय जैव विविधता के साथ-साथ नदी तथा झील के किनारे रहने वाले समुदायों के लोगों की आजीविका के समक्ष एक गंभीर खतरा पैदा हो गया है।
  - इसके लिए खाद्य-पदार्थ की अत्यधिक मांग, बाजार का दबाव, मछली पकड़ने की गियर तकनीक का विकास, उचित प्रबंधन दृष्टिकोण और नीतियों का अभाव, आकस्मिक रूप से जाल में अवांछित समुद्री जीवों का फंसना, और जंगली प्रजातियों का अविनियमित एक्वैरियम व्यापार प्रमुख कारण हैं।

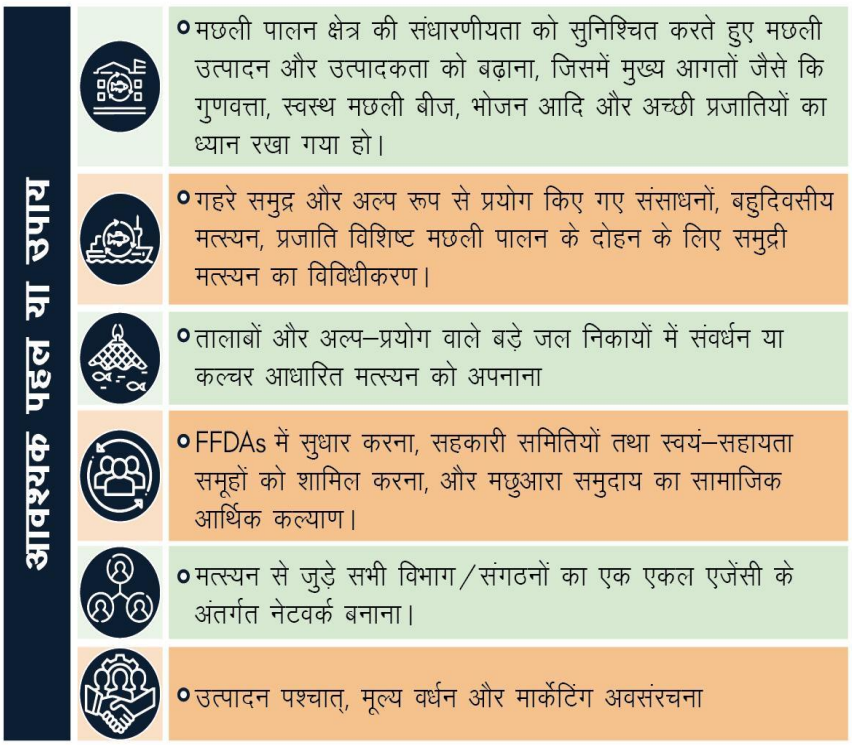

- **जलवायु परिवर्तन:** मछलियां अपने शरीर के तापमान को नियंत्रित नहीं कर सकती हैं। इसलिए जल के तापमान में वृद्धि या कमी का उनके विकास तथा प्रजनन पर गहरा प्रभाव पड़ेगा, और साथ ही जल के प्रवाह और रासायनिकता में परिवर्तन होगा।
- **आक्रामक प्रजातियां:** विदेशी आक्रामक प्रजातियों का प्रवेश वस्तुतः देशी मछली प्रजातियों और ताजे जल के उनके पारितंत्र के समक्ष सबसे बड़े वैश्विक खतरों में से एक है।
- **पर्यावास में परिवर्तन, विखंडन और विनाश:** बांध निर्माण, कृषि पद्धतियों, शहरी विकास, नदियों के तलकर्षण संबंधी गतिविधियों और भू-आकृतिक परिवर्तन के कारण।

निष्कर्ष

विभिन्न प्रजातियों और विभिन्न क्षेत्रकों के लिए विनियामकीय प्रबंधन रणनीतियों और ठोस नीतिगत प्रयासों के माध्यम से मत्स्य पालन क्षेत्रक के संसाधनों का संधारणीय दोहन करना अभी भी संभव है। पर्यावरण के अनुकूल पद्धतियों के अनुसार मत्स्य पालन करने और खपत को जारी रखते हुए इस क्षेत्रक में संधारणीयता बनाए रखने की आवश्यकता है।